Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

कृषि नवाचारों का ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना पर प्रभाव: पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोधार्थी

[1]राकेश कुमार (समाजशास्त्र विभाग) के.जी.के

महाविद्यालय, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

शोध पर्यवेक्षक

[2]डॉ. ममता रानी प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, के.जी.के. (पी.जी) कालेज मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

महात्मा ज्योतिबा फूले वि.वि.बरेली

https://doi.org/10.5281/zenodo.21807550

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चयनित ग्रामों में कृषि नवाचारों का ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना पर पड़ने वाले प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। कृषि नवाचार जैसे उन्नत बीज, आधुनिक सिंचाई तकनीक, उर्वरक, कृषि यंत्रीकरण तथा सूचना एवं संचार आधारित कृषि सेवाएँ ग्रामीण समाज में उत्पादन प्रणाली के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करती हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध डिजाइन को अपनाते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़े संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चयनित ग्रामों के किसानों एवं ग्रामीण परिवारों से संकलित किए गए। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि कृषि नवाचारों के अपनाने से अधिकांश उत्तरदाताओं की कृषि आय, उत्पादकता और जीवन–स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और उपभोग सुविधाओं तक पहुँच बढ़ी है। इसके साथ ही कृषि नवाचारों ने गामीण समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना, पारिवारिक निर्णय–प्रक्रिया और श्रम संबंधों में भी परिवर्तन उत्पन्न किया है। हालांकि, कृषि यंत्रीकरण के कारण श्रम की मांग में कमी और सीमांत किसानों की सीमित भागीदारी जैसी चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। अतः अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि कृषि नवाचार ग्रामीण विकास के लिए अनिवार्य हैं, किंतु इनके संतुलित एवं समावेशी क्रियान्वयन के बिना सामाजिक समानता सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

मुख्य शब्द: कृषि नवाचार, ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना, कृषि यंत्रीकरण, जीवन–स्तर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश

परिचय

भारतीय समाज की संरचना मूलतः ग्रामीण एवं कृषि–आधारित रही है, जहाँ कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं बल्कि सामाजिक संगठन, पारिवारिक संबंधों, सांस्कृतिक परंपराओं और ग्रामीण जीवन–शैली का आधार रही है। कृषि के माध्यम से ही ग्रामीण समाज में वर्ग संरचना, जातीय संबंध, श्रम विभाजन और सत्ता संतुलन का निर्धारण होता रहा है। समय के साथ कृषि प्रणाली में आए नवाचारों ने ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। उन्नत बीज, आधुनिक सिंचाई तकनीक, रासायनिक एवं जैविक उर्वरक, कृषि यंत्रीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा कृषि विस्तार सेवाओं जैसे नवाचारों ने न केवल उत्पादन क्षमता को बढ़ाया है, बल्कि ग्रामीण जीवन के सामाजिक और आर्थिक स्वरूप में भी व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं (सिंह, 2012, गुप्ता, 2013)। कृषि नवाचारों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने हेतु रोजर्स द्वारा प्रतिपादित नवाचार प्रसार सिद्धांत एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करता है। इस सिद्धांत के अनुसार किसी भी समाज में नवाचारों का प्रसार केवल तकनीकी उपयोगिता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि सामाजिक संरचना, संचार नेटवर्क, समय तथा नवाचार अपनाने वालों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से भी गहराई से जुड़ा होता है (रोजर्स, 2003)। ग्रामीण समाज में यह प्रक्रिया और अधिक जटिल हो जाती है, क्योंकि यहाँ परंपरागत मान्यताएँ, भूमि स्वामित्व की असमानता, जातीय व्यवस्था और संसाधनों की सीमित उपलब्धता नवाचारों को अपनाने की गति को प्रभावित करती है। भारतीय कृषि इतिहास में हरित क्रांति को कृषि नवाचारों का एक निर्णायक चरण माना जाता है। हरित क्रांति ने खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की, किंतु इसके साथ–साथ ग्रामीण समाज में सामाजिक एवं आर्थिक विषमता को भी जन्म दिया। बड़े किसानों

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

को आधुनिक तकनीकों का अधिक लाभ प्राप्त हुआ, जबकि छोटे और सीमांत किसान अपेक्षाकृत पीछे रह गए (सिंह, 2016)। पाटिल (2011) के अनुसार कृषि नवाचारों ने ग्रामीण वर्ग संरचना को और अधिक स्पष्ट किया, जहाँ संसाधन–सम्पन्न वर्ग का प्रभुत्व बढ़ा और कमजोर वर्गों की निर्भरता बनी रही।

कृषि आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप ग्रामीण सामाजिक संबंधों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। चौधरी (2014) के अनुसार कृषि नवाचारों के प्रभाव से पारंपरिक सामुदायिक सहयोग, संयुक्त परिवार व्यवस्था और पारस्परिक निर्भरता में कमी आई है, जबकि बाजार–आधारित और व्यक्तिवादी संबंधों का विस्तार हुआ है। इसी संदर्भ में शर्मा एवं वर्मा (2015) ने यह निष्कर्ष निकाला कि कृषि प्रौद्योगिकी के विस्तार से ग्रामीण सत्ता संरचना में बदलाव आया है और तकनीकी संसाधनों तक पहुँच रखने वाले वर्गों का सामाजिक प्रभाव बढ़ा है।

कृषि नवाचारों का प्रभाव ग्रामीण आजीविका और श्रम संरचना पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गुप्ता (2013) ने कृषि नवाचार प्रणाली की अवधारणा के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि नवाचार केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं हैं, बल्कि वे ज्ञान, संस्थानों और सामाजिक नेटवर्क का संयुक्त परिणाम हैं। इन नवाचारों ने ग्रामीण क्षेत्रों में आय के नए स्रोत तो उत्पन्न किए, किंतु पारंपरिक श्रम अवसरों में कमी भी लाई। मिश्रा (2018) के अनुसार कृषि यंत्रीकरण के कारण खेतिहर मजदूरों की मांग में गिरावट आई, जिससे ग्रामीण बेरोजगारी और ग्रामीण–शहरी प्रवासन की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई।

ग्रामीण जीवन–स्तर पर कृषि नवाचारों का प्रभाव अपेक्षाकृत सकारात्मक माना गया है। कुमार एवं सिंह (2019) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृषि नवाचारों के कारण किसानों की आय में वृद्धि हुई, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और उपभोग स्तर में सुधार हुआ। हालांकि यह लाभ सभी सामाजिक वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं हुआ। मेहता (2015) के अनुसार तकनीकी परिवर्तन ने ग्रामीण समाज में आर्थिक अवसरों के साथ–साथ सामाजिक तनाव और असमानता को भी बढ़ाया है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश भारत का एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र है, जहाँ गन्ना, गेहूँ और धान जैसी प्रमुख फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। इस क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं, कृषि यंत्रीकरण और आधुनिक तकनीकों का अपेक्षाकृत अधिक प्रसार हुआ है (यादव एवं सिंह, 2017)। कृषि नवाचारों ने यहाँ उत्पादन वृद्धि और बाजार एकीकरण को बढ़ावा दिया है, किंतु इनके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का गहन समाजशास्त्रीय अध्ययन अभी भी सीमित है।

सरकारी नीतियों और योजनाओं ने भी कृषि नवाचारों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार तकनीकी हस्तक्षेपों और किसान–केंद्रित योजनाओं के माध्यम से कृषि क्षेत्र में नवाचारों को बढ़ावा दिया गया है (भारत सरकार, 2020)। वहीं, विश्व बैंक की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि भारत में कृषि नवाचार ग्रामीण विकास की कुंजी हैं, किंतु इनके लाभों का समान वितरण सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है (विश्व बैंक, 2018)।

2. साहित्य समीक्षा

कृषि नवाचारों और ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना के बीच संबंध को समझने हेतु समाजशास्त्रीय साहित्य में व्यापक विमर्श उपलब्ध है। नवाचार केवल तकनीकी परिवर्तन तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे ग्रामीण समाज की संरचना, उत्पादन संबंधों, आय वितरण, श्रम विभाजन, सामाजिक गतिशीलता तथा जीवन–स्तर को भी गहराई से प्रभावित करते हैं। इस संदर्भ में रोजर्स (2003) का डिफ्यूजन ऑफ इनोवेशन्स सिद्धांत एक आधारभूत ढांचा प्रदान करता है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि नवाचारों का प्रसार सामाजिक प्रणाली, संचार माध्यमों, समय और अपनाने की प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। यह सिद्धांत ग्रामीण समाज में कृषि नवाचारों के स्वीकार और अस्वीकार की प्रक्रिया को समझने में अत्यंत उपयोगी है।

भारतीय संदर्भ में कृषि नवाचारों को ग्रामीण विकास से जोड़कर कई विद्वानों ने अध्ययन किया है। सिंह (2012) ने यह प्रतिपादित किया कि भारत में कृषि नवाचारों ने उत्पादन वृद्धि के साथ–साथ ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना में भी परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। उनके अनुसार उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई तकनीक और यंत्रीकरण ने किसानों की आय में वृद्धि की, किंतु इसके साथ–साथ सामाजिक असमानताओं को भी जन्म दिया। इसी क्रम में चौधरी (2014) ने ग्रामीण भारत में कृषि आधुनिकीकरण को सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारक माना और यह निष्कर्ष निकाला कि नवाचारों के कारण पारंपरिक सामाजिक संबंधों में शिथिलता आई है।

हरित क्रांति के पश्चात ग्रामीण समाज में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करते हुए सिंह (2016) ने बताया कि कृषि नवाचारों ने उत्पादन प्रणाली को तो सुदृढ़ किया, परंतु भूमि स्वामित्व, वर्ग संरचना और श्रम संबंधों में विषमता को भी

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

बढ़ाया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नवाचारों का प्रभाव समान रूप से सभी वर्गों पर नहीं पड़ता। इस विचार को आगे बढ़ाते हुए पाटिल (2011) ने भारतीय कृषि में नवाचारों को सामाजिक विषमता से जोड़ते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि बड़े किसानों को नवाचारों से अधिक लाभ मिला, जबकि छोटे और सीमांत किसान अपेक्षाकृत वंचित रहे।

कृषि नवाचारों और ग्रामीण आजीविका के संबंध पर गुप्ता (2013) का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने कृषि नवाचार प्रणाली के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि नवाचार केवल तकनीकी समाधान नहीं हैं, बल्कि वे ज्ञान, संस्थानों और सामाजिक नेटवर्क का संयुक्त परिणाम हैं। उनके अनुसार नवाचारों ने ग्रामीण आजीविका के नए अवसर तो पैदा किए, किंतु पारंपरिक रोजगार संरचनाओं को भी प्रभावित किया। इसी दिशा में सक्सेना (2010) ने ग्रामीण विकास में कृषि नवाचारों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि नवाचारों के बिना सतत ग्रामीण विकास संभव नहीं है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में कृषि नवाचारों को समझने हेतु यादव एवं सिंह (2017) का अध्ययन उल्लेखनीय है। उन्होंने इस क्षेत्र में कृषि तकनीकों के अपनाने की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए पाया कि सिंचाई, उन्नत बीज और यंत्रीकरण का प्रभाव किसानों की उत्पादकता और आय पर सकारात्मक पड़ा है। हालांकि, उन्होंने यह भी इंगित किया कि सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर नवाचारों को अपनाने में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। इसी प्रकार शर्मा एवं वर्मा (2015) ने कृषि प्रौद्योगिकी के ग्रामीण सामाजिक संरचना पर प्रभाव का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि नवाचारों के कारण पारिवारिक संरचना, सामाजिक संबंध और ग्रामीण सत्ता–संतुलन में परिवर्तन आया है।

ग्रामीण श्रम संरचना पर कृषि नवाचारों के प्रभाव को मिश्रा (2018) ने विशेष रूप से रेखांकित किया। उनके अनुसार कृषि यंत्रीकरण ने श्रम की मांग को घटाया, जिससे ग्रामीण बेरोजगारी और प्रवासन की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई। यह निष्कर्ष ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसी क्रम में मेहता (2015) ने तकनीकी परिवर्तन को ग्रामीण सामाजिक संबंधों के पुनर्गठन से जोड़ा और कहा कि नवाचारों ने पारंपरिक सामुदायिक सहयोग को कमजोर किया है।

कृषि नवाचारों और जीवन–स्तर के संबंध पर कुमार एवं सिंह (2019) का अध्ययन दर्शाता है कि नवाचारों से आय स्तर में वृद्धि हुई, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और उपभोग पैटर्न में सुधार देखने को मिला। हालांकि, यह सुधार सभी वर्गों में समान नहीं था। शुक्ला (2016) ने कृषि विस्तार सेवाओं और नवाचार प्रसार की भूमिका का विश्लेषण करते हुए बताया कि संस्थागत समर्थन नवाचारों को अपनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

नीतिगत दृष्टि से, भारत सरकार (2020) की कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि सरकारी योजनाओं और तकनीकी हस्तक्षेपों ने कृषि नवाचारों को बढ़ावा दिया है। वहीं, विश्व बैंक (2018) की रिपोर्ट भारत में कृषि नवाचारों को ग्रामीण विकास की कुंजी मानती है, परंतु सामाजिक समावेशन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर बल देती है।

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चयनित ग्रामों में कृषि नवाचारों के ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध डिजाइन अपनाया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया, जिसमें प्राथमिक आँकड़े चयनित किसानों एवं ग्रामीण परिवारों से संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित किए गए, जबकि द्वितीयक आँकड़े पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी रिपोर्टों एवं विश्वसनीय जर्नलों से प्राप्त किए गए। अध्ययन क्षेत्र के चयन हेतु बहु–स्तरीय नमूना तकनीक का प्रयोग किया गया, जिसके अंतर्गत पहले पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कृषि–प्रधान जिलों का चयन किया गया, तत्पश्चात ग्रामों और उत्तरदाताओं का यादृच्छिक चयन किया गया। सामाजिक–आर्थिक संरचना के विश्लेषण हेतु आय स्तर, रोजगार की प्रकृति, भूमि स्वामित्व, सामाजिक संबंध, जीवन–स्तर तथा नवाचार अपनाने की प्रवृत्तियों को प्रमुख चर के रूप में शामिल किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत तथा तुलनात्मक विधियों के माध्यम से किया गया, जिससे कृषि नवाचारों के समाजशास्त्रीय प्रभावों को स्पष्ट एवं व्यवस्थित रूप से समझा जा सके।

4. परिणाम एवं विश्लेषण

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

प्रस्तुत अध्याय में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चयनित ग्रामों में कृषि नवाचारों के ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना पर पड़ने वाले प्रभावों से संबंधित संकलित प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषण को क्रमबद्ध रूप से सामाजिक–आर्थिक प्रोफाइल, कृषि नवाचारों के प्रकार, नवाचार अपनाने की प्रवृत्ति, आय–रोजगार में परिवर्तन, सामाजिक संरचना पर प्रभाव तथा जीवन–स्तर में आए परिवर्तनों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

4.1 उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक प्रोफाइल

तालिका 4.1: उत्तरदाताओं का आयु–वर्ग अनुसार वितरण

आयु–वर्ग (वर्ष)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
18–30	28	14.0
31–45	76	38.0
46–60	64	32.0
60 से ऊपर	32	16.0
कुल	**200**	**100.0**

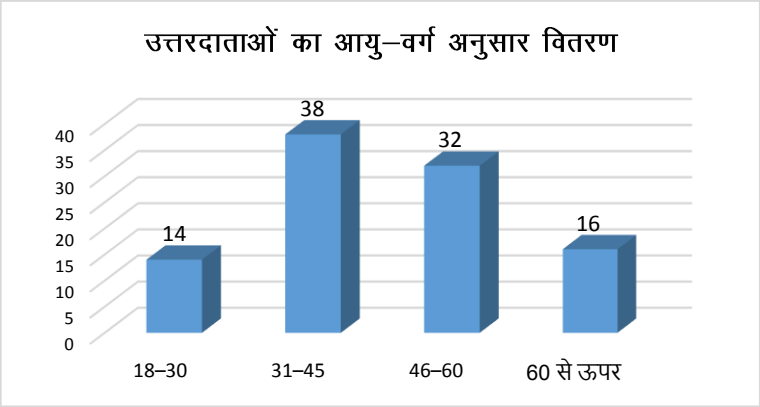

चित्र संख्या 4.1: उत्तरदाताओं का आयु–वर्ग अनुसार वितरण

विश्लेषण:

तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता 31–45 वर्ष आयु–वर्ग (38%) से संबंधित हैं। यह वर्ग कृषि नवाचारों को अपनाने में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय पाया गया, क्योंकि इस आयु–वर्ग में श्रम क्षमता, निर्णय–क्षमता और तकनीकी स्वीकार्यता अधिक होती है।

तालिका 4.2: भूमि स्वामित्व के आधार पर वितरण

भूमि का आकार	उत्तरदाता	प्रतिशत
सीमांत (1 हेक्टेयर तक)	74	37.0
लघु (1–2 हेक्टेयर)	62	31.0
मध्यम (2–4 हेक्टेयर)	42	21.0
बड़े किसान (4 हेक्टेयर से अधिक)	22	11.0
कुल	**200**	**100.0**

विश्लेषण:

अध्ययन क्षेत्र में सीमांत और लघु किसानों का प्रभुत्व (68%) स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह तथ्य कृषि नवाचारों के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों के विश्लेषण को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है, क्योंकि संसाधनों की सीमित उपलब्धता नवाचार अपनाने को प्रभावित करती है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

4.2 कृषि नवाचारों के प्रकार

तालिका 4.3: अपनाए गए प्रमुख कृषि नवाचार

कृषि नवाचार	उत्तरदाता	प्रतिशत
उन्नत बीज	162	81.0
रासायनिक/जैविक उर्वरक	148	74.0
आधुनिक सिंचाई तकनीक	126	63.0
कृषि यंत्रीकरण	104	52.0
मोबाइल/डिजिटल कृषि सूचना	86	43.0

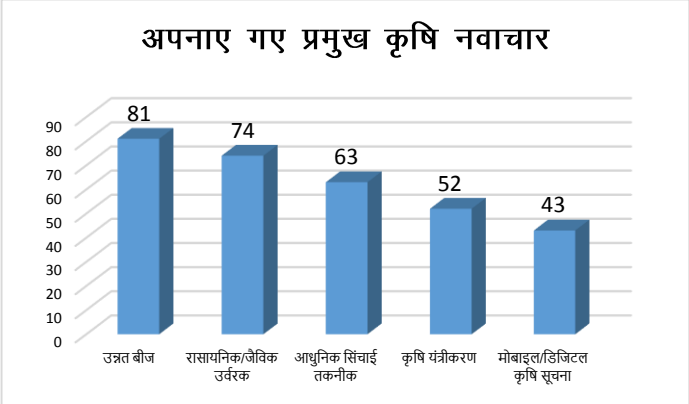

चित्र संख्या 4.2: अपनाए गए प्रमुख कृषि नवाचार

विश्लेषण:

तालिका दर्शाती है कि उन्नत बीज (81%) और उर्वरकों (74%) का उपयोग सर्वाधिक है। डिजिटल कृषि सूचना का उपयोग अभी भी अपेक्षाकृत कम (43%) है, जो डिजिटल विभाजन की ओर संकेत करता है।

4.3 कृषि नवाचार अपनाने से आय में परिवर्तन

तालिका 4.4: नवाचारों के बाद वार्षिक कृषि आय में परिवर्तन

आय में परिवर्तन	उत्तरदाता	प्रतिशत
उल्लेखनीय वृद्धि	92	46.0
मध्यम वृद्धि	64	32.0
कोई विशेष परिवर्तन नहीं	28	14.0
आय में कमी	16	8.0
कुल	**200**	**100.0**

विश्लेषण:

78% उत्तरदाताओं ने कृषि नवाचारों के बाद अपनी आय में वृद्धि की बात स्वीकार की। इससे स्पष्ट होता है कि नवाचारों का आर्थिक प्रभाव सकारात्मक है, यद्यपि सभी किसानों को समान लाभ नहीं मिला।

4.4 रोजगार एवं श्रम संरचना पर प्रभाव

तालिका 4.5: कृषि यंत्रीकरण का श्रम पर प्रभाव

प्रभाव का प्रकार	उत्तरदाता	प्रतिशत
श्रम की आवश्यकता में कमी	112	56.0
कोई परिवर्तन नहीं	54	27.0

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

श्रम की आवश्यकता में वृद्धि	34	17.0
कुल	**200**	**100.0**

विश्लेषण:

56% उत्तरदाताओं ने माना कि कृषि यंत्रीकरण से खेतिहर श्रमिकों की आवश्यकता में कमी आई है। यह परिणाम ग्रामीण बेरोजगारी और प्रवासन की प्रवृत्ति को समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाता है।

4.5 सामाजिक संरचना पर प्रभाव

तालिका 4.6: कृषि नवाचारों का सामाजिक संबंधों पर प्रभाव

सामाजिक परिवर्तन	उत्तरदाता	प्रतिशत
सामुदायिक सहयोग में कमी	78	39.0
पारिवारिक निर्णयों में बदलाव	64	32.0
सामाजिक स्थिति में सुधार	42	21.0
कोई विशेष प्रभाव नहीं	16	8.0
कुल	**200**	**100.0**

विश्लेषण:

तालिका से स्पष्ट है कि कृषि नवाचारों ने सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित किया है। सामुदायिक सहयोग में कमी (39%) और पारिवारिक निर्णय–प्रक्रिया में बदलाव (32%) सामाजिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों को दर्शाते हैं।

4.6 जीवन–स्तर में परिवर्तन

तालिका 4.7: कृषि नवाचारों के बाद जीवन–स्तर

जीवन–स्तर में परिवर्तन	उत्तरदाता	प्रतिशत
उल्लेखनीय सुधार	88	44.0
मध्यम सुधार	72	36.0
कोई परिवर्तन नहीं	26	13.0
गिरावट	14	7.0
कुल	**200**	**100.0**

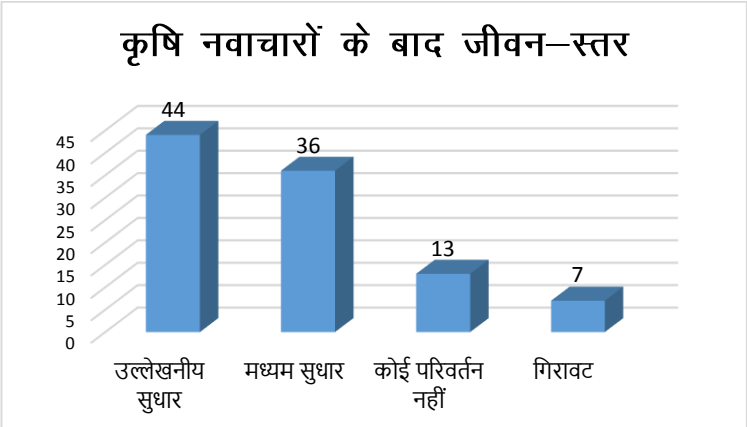

चित्र संख्या 4.3: कृषि नवाचारों के बाद जीवन–स्तर

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

विश्लेषण:

80% उत्तरदाताओं ने जीवन–स्तर में सुधार की बात स्वीकार की। इसमें बेहतर आवास, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच शामिल है, जिससे कृषि नवाचारों के सकारात्मक सामाजिक प्रभाव स्पष्ट होते हैं। कृषि नवाचारों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामों की सामाजिक–आर्थिक संरचना को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर आय और जीवन–स्तर में सुधार देखा गया है, वहीं दूसरी ओर श्रम संरचना में बदलाव, सामाजिक सहयोग में कमी और असमानता जैसे मुद्दे भी उभर कर सामने आए हैं। अतः कृषि नवाचारों को केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक हस्तक्षेप के रूप में समझना आवश्यक है।

5. समग्र निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामों में कृषि नवाचारों ने ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक संरचना को गहराई से और बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। उन्नत बीज, आधुनिक सिंचाई, उर्वरक, यंत्रीकरण और सूचना–आधारित तकनीकों के उपयोग से अधिकांश किसानों की कृषि उत्पादकता, आय स्तर और जीवन–स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और उपभोग संबंधी सुविधाओं तक पहुँच बढ़ी है। साथ ही, नवाचारों ने ग्रामीण समाज में पारंपरिक सामाजिक संबंधों, पारिवारिक निर्णय–प्रक्रिया और सत्ता संरचना में परिवर्तन उत्पन्न किया है, जहाँ तकनीकी संसाधनों तक अधिक पहुँच रखने वाले वर्गों का सामाजिक प्रभाव बढ़ा है। दूसरी ओर, कृषि यंत्रीकरण के कारण खेतिहर श्रम की आवश्यकता में कमी, सीमांत किसानों की सीमित सहभागिता और सामाजिक असमानताओं के विस्तार जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अतः यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि कृषि नवाचार ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक हैं, किंतु इनके लाभों का समान वितरण, संस्थागत समर्थन और सामाजिक समावेशन सुनिश्चित किए बिना सतत एवं संतुलित ग्रामीण विकास संभव नहीं है।

संदर्भ

- रोजर्स, ई. एम. (2003). डिफ्यूजन ऑफ इनोवेशन्स (5वाँ संस्करण). न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस.
- सिंह, के. (2012). भारत में कृषि नवाचार और ग्रामीण विकास. इंडियन जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 31(2), 145–160.
- शर्मा, आर. के., एवं वर्मा, एस. (2015). कृषि प्रौद्योगिकी का ग्रामीण सामाजिक संरचना पर प्रभाव. समाजशास्त्रीय अध्ययन, 9(1), 67–82.
- चौधरी, एम. (2014). ग्रामीण भारत में कृषि आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन. भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा, 48(3), 201–218.
- सिंह, बी. पी. (2016). हरित क्रांति के बाद ग्रामीण समाज में परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स.
- गुप्ता, ए. के. (2013). कृषि नवाचार प्रणाली और ग्रामीण आजीविका. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 48(39), 54–61.
- यादव, एस. आर., एवं सिंह, ए. (2017). पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि तकनीकी अपनाने की प्रवृत्तियाँ. जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 22(2), 89–104.
- पाटिल, आर. एस. (2011). भारतीय कृषि में नवाचार एवं सामाजिक विषमता. समाज और विकास, 7(1), 33–48.
- मिश्रा, डी. के. (2018). कृषि यंत्रीकरण और ग्रामीण श्रम संरचना में बदलाव. भारतीय श्रम अध्ययन पत्रिका, 12(4), 211–226.
- सक्सेना, एन. सी. (2010). ग्रामीण विकास में कृषि नवाचार की भूमिका. ग्रामीण अर्थशास्त्र, 5(2), 101–117.
- कुमार, पी., एवं सिंह, आर. (2019). कृषि नवाचार, आय स्तर एवं जीवन गुणवत्ता. जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 14(1), 59–73.
- मेहता, बी. (2015). ग्रामीण समाज में तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक संबंध. भारतीय सामाजिक अनुसंधान, 10(3), 141–156.

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 2, April -June 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

- शुक्ला, ए. (2016). कृषि विस्तार सेवाएँ और नवाचार प्रसार. कृषि समाजशास्त्र जर्नल, 8(2), 25–40.
- भारत सरकार. (2020). कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन.
- विश्व बैंक. (2018). भारत में कृषि नवाचार और ग्रामीण विकास. वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक.